वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:6 | अंक: 67 | गुरुवार 13 अगस्त 2026 | दैनिक ई-पेपर

# शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

# राजस्थान स्टेट इनोवेशन हब को चुनिंदा क्षेत्रों में उत्कृष्टता का केन्द्र बनाएं: श्रीनिवास

**स्टार्टअप इनक्यूबेशन सेंटर, प्रदर्शनी हॉल और क्षमता निर्माण की सुविधाएं होंगी विकसित**

## आईआईटी मद्रास रिसर्च पार्क सहित सफल मॉडल का करें अध्ययन

**जयपुर. शाबाश इंडिया**

मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास ने कहा कि प्रस्तावित राजस्थान स्टेट इनोवेशन हब भविष्य की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए एक महत्वाकांक्षी परियोजना है। उन्होंने कहा कि हब की रूपरेखा तैयार करते समय राजस्थान की मौजूदा क्षमताओं और मजबूत चुनिंदा क्षेत्रों जैसे कृषि अभियांत्रिकी, टेक्सटाइल, हैंड प्रिंटिंग, मेम्ब्रेन टेक्नोलॉजी पर विशेष फोकस किया जाए। इसके लिए देश के सफल इनोवेशन मॉडल का अध्ययन कर प्रतिष्ठित शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थानों तथा नवाचार के क्षेत्र में काम कर रहे विशेषज्ञों से भी सुझाव लिए जाएं। मुख्य सचिव ने बुधवार को शासन सचिवालय में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा गत 11 मई, 2026 को की गई स्टेट इनोवेशन हब की घोषणा के क्रियान्वयन के संबंध में आयोजित बैठक की अध्यक्षता करते हुए ये निर्देश दिए। बैठक में प्रताप नगर स्थित कोचिंग हब इंस्टीट्यूशनल कॉम्प्लेक्स में स्टेट इनोवेशन हब की स्थापना के प्रस्ताव तथा इसके स्वरूप पर विस्तृत चर्चा की गई। श्रीनिवास ने कहा कि राज्य में आई-स्टार्ट ने स्टार्टअप इकोसिस्टम को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अब स्टेट इनोवेशन हब को इस दिशा में एक कदम आगे बढ़ाते हुए ऐसा मंच बनाया जाए, जहां नए विचारों को प्रोत्साहन मिलने के साथ उन्हें व्यावहारिक रूप देने के लिए आवश्यक सहयोग भी उपलब्ध हो। राज्य सरकार का आई-स्टार्ट कार्यक्रम स्टार्टअप, निवेशक, इनक्यूबेटर, एक्सेलरेटर और मेंटर्स को एक साझा प्लेटफॉर्म उपलब्ध कराता है। मुख्य सचिव ने वित्त विभाग को परियोजना के वित्तीय पहलुओं का विस्तृत परीक्षण करने के लिए संबंधित विभागों के साथ बैठक करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री की घोषणा के अनुरूप स्टेट इनोवेशन हब को किस स्वरूप में और कहां विकसित किया जाए, इसका सभी पहलुओं से अध्ययन कर स्पष्ट कार्ययोजना तैयार की जाए। बैठक में अतिरिक्त मुख्य सचिव, नगरीय विकास एवं आवासन विभाग श्री आलोक गुप्ता, शासन सचिव एवं आयुक्त, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग डॉ.आरूषी अजेय मलिक, वित्त विभाग तथा राजस्थान आवासन मंडल के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

## हब उद्यमिता और उद्योगों की जरूरतों को जोड़ने वाला प्रभावी मंच बना

मुख्य सचिव ने प्रस्तावित हब में स्टार्टअप इनक्यूबेशन सेंटर, प्रदर्शनी हॉल तथा क्षमता निर्माण कार्यशालाओं के लिए आवश्यक सुविधाओं को शामिल करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि हब केवल भवन या बुनियादी सुविधाओं तक सीमित नहीं रहे, बल्कि नवाचार, अनुसंधान, उद्यमिता और उद्योगों की जरूरतों को जोड़ने वाला प्रभावी मंच बने। उन्होंने अधिकारियों को आईआईटी मद्रास रिसर्च पार्क जैसे सफल मॉडलों का अध्ययन करने तथा उनके उपयोगी पहलुओं को राजस्थान की आवश्यकताओं के अनुरूप अपनाने की संभावनाएं तलाशने के निर्देश दिए। साथ ही बिट्स पिलानी, एमएनआईटी और भारतीय विज्ञान संस्थान जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों के विशेषज्ञों, नवाचार के क्षेत्र में कार्य कर रहे लोगों और विचारकों से परामर्श कर परियोजना की रूपरेखा को और मजबूत बनाने को कहा।

# लोकतंत्र सेनानियों के अनुभव से प्रेरणा ले युवा पीढ़ी: भजनलाल

**जयपुर. शाबाश इंडिया**

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि आपातकाल के समय लोकतंत्र सेनानियों का संघर्ष लोकतंत्र रक्षा की ऐतिहासिक गाथा है। उनका त्याग और समर्पण युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र सेनानी अपने अनुभव से समाज को लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति समर्पित भाव से कार्य करने के लिए प्रेरित करें। मुख्यमंत्री बुधवार को मुख्यमंत्री निवास पर लोकतंत्र सेनानी सम्मान समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि अनेक पीढ़ियों के बलिदान के बाद देश को आजादी मिली। वहीं, आपातकाल के दौरान लोकतंत्र सेनानियों ने राष्ट्रहित के लिए कठिन परिस्थितियों का सामना कर लोकतंत्र की रक्षा की। इसलिए राष्ट्रवाद की विचारधारा उनकी तपस्या और संघर्ष से विशाल वटवृक्ष का रूप ले चुकी है। उन्होंने कहा कि युवा पीढ़ी को यह पता होना चाहिए कि उसे जो लोकतांत्रिक व्यवस्था सहज रूप से मिली है उसके पीछे लोकतंत्र सेनानियों का त्याग छिपा है। जिससे वे लोकतंत्र के महत्व और संरक्षण की दिशा में काम कर सकें। उन्होंने कहा कि प्रत्येक लोकतंत्र सेनानी को अपने जीवन के अनुभवों को लिखित रूप में दर्ज करना चाहिए। वहीं, राज्य सरकार भी इनके योगदान को संरक्षित करेगी।

# रोटरी क्लब जयपुर नॉर्थ का भव्य राजतिलक एवं पदस्थापना समारोह संपन्न

**सेवा, संस्कार और संकल्प के साथ नए रोटरी वर्ष 2026-27 का शानदार आगाज**

**जयपुर. शाबाश इंडिया**

रोटरी क्लब जयपुर नॉर्थ का वर्ष 2026-27 का भव्य ‘राजतिलक एवं पदस्थापना समारोह’ 8 एवं 9 अगस्त को द सूर्या गोल्डन पैलेस, पुष्कर में उत्साह, उमंग और पारिवारिक वातावरण के बीच शानदार तरीके से आयोजित किया गया। दो दिवसीय समारोह में क्लब के लगभग 200 सदस्यों एवं परिजनों ने सहभागिता कर आयोजन को यादगार बनाया। समारोह के मुख्य आकर्षण के रूप में वर्ष 2026-27 की नई कार्यकारिणी का विधिवत पदस्थापना एवं शपथ ग्रहण समारोह आयोजित हुआ। इस अवसर पर रोटे. अनिल जैन ने अध्यक्ष पद की शपथ ग्रहण की, जबकि रोटे. अंकुर शाह ने सचिव पद की शपथ ली। इसके साथ ही क्लब के अन्य पदाधिकारियों एवं बोर्ड सदस्यों को भी उनके दायित्वों की शपथ दिलाई गई। सभी ने रोटरी के सेवा मूल्यों को सर्वोपरि रखते हुए पूर्ण निष्ठा, समर्पण एवं टीम भावना के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करने का संकल्प लिया। नवनियुक्त अध्यक्ष रोटे. अनिल जैन के नेतृत्व में क्लब ने नए रोटरी वर्ष में सेवा, सामाजिक सरोकार, पर्यावरण संरक्षण, स्वास्थ्य, शिक्षा एवं जरूरतमंदों की सहायता के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित करने का संकल्प लिया। समारोह के दौरान सदस्यों का पारंपरिक तिलक लगाकर एवं भव्य स्वागत कर अभिनंदन किया गया। इसके बाद पूल पार्टी, मनोरंजक खेल, फेलोशिप तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने आयोजन में चार चांद लगा दिए। शाम को दीप प्रज्वलन के साथ मुख्य समारोह का शुभारंभ हुआ। आकर्षक सांस्कृतिक प्रस्तुतियों और संगीत के बीच सदस्यों ने पूरे उत्साह से नए रोटरी वर्ष का स्वागत किया। अध्यक्ष अनिल जैन ने कहा कि रोटरी क्लब जयपुर नॉर्थ की पहचान केवल आयोजनों तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाना क्लब की सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि आने वाले वर्ष में क्लब सभी सदस्यों के सहयोग से रक्तदान, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य शिविर, पर्यावरण संरक्षण, पौधरोपण, गौसेवा, शिक्षा तथा अन्य जनसेवा गतिविधियों को और व्यापक स्तर पर आयोजित करेगा। उन्होंने कहा, ‘‘हमारा लक्ष्य केवल कार्यक्रम आयोजित करना नहीं, बल्कि सेवा के माध्यम से समाज में सकारात्मक और स्थायी बदलाव लाना है। क्लब का प्रत्येक सदस्य इस सेवा यात्रा का महत्वपूर्ण सहभागी है।’’ समारोह के दूसरे दिन प्रातः पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसके साथ ही ‘जश्न-ए-आजादी’ कार्यक्रम में देशभक्ति की भावना के साथ सदस्यों ने राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का संदेश दिया। बाद में सभी सदस्यों ने पुष्कर स्थित ब्रह्मा मंदिर के दर्शन कर सुख-समृद्धि एवं समाज कल्याण की कामना की। क्लब सदस्यों ने बताया कि अध्यक्ष अनिल जैन के नेतृत्व में पिछले वर्षों में क्लब ने सामाजिक सेवा एवं फेलोशिप के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किए हैं तथा अनेक प्रतिष्ठित सम्मानों से सम्मानित हुआ है। वर्ष 2026-27 में भी क्लब पूरी टीम भावना के साथ समाजसेवा के नए आयाम स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध रहेगा। दो दिवसीय राजतिलक समारोह ने सेवा, मित्रता, एकता और पारिवारिक सौहार्द का अनूठा संदेश दिया। कार्यक्रम के समापन पर अध्यक्ष रोटे. अनिल जैन ने समारोह को सफल बनाने में सहयोग देने वाले सभी पदाधिकारियों, बोर्ड सदस्यों, संयोजकों, प्रायोजकों एवं पूरे रोटरी क्लब जयपुर नॉर्थ परिवार का आभार व्यक्त किया।

# भीनमाल विकास परिषद ने हरियाली अमावस्या पर पौधारोपण कर शुरू किया पर्यावरण संरक्षण अभियान

## गौ-सेवा और जीवदया के साथ पर्यावरण संरक्षण का दिया संदेश

भीनमाल (मुकेश सोलंकी)

भीनमाल विकास परिषद की ओर से हरियाली अमावस्या के पावन अवसर पर गोपाल कृष्ण गौशाला परिसर में पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण अभियान का आगाज किया गया। परिषद की ओर से हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी जीवदया और समाजसेवा के संदेश के साथ विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत गौ-सेवा के साथ हुई। परिषद के सदस्यों ने गौशाला में गौवंश को ग्वार की चूरी, गुड़ एवं हरा चारा खिलाकर पुण्य लाभ अर्जित किया। इसके बाद गौशाला परिसर में पौधारोपण किया गया। परिषद के संरक्षक इंजीनियर नेनाराम चौहान ने बताया कि पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए परिषद प्रतिवर्ष हरियाली अमावस्या से पौधारोपण अभियान शुरू करती है। इसी कड़ी में इस बार भी गौशाला परिसर से इस पुनीत कार्य की शुरूआत की गई है। परिषद सदस्य विवेकानंद बिस्सा ने हरियाली अमावस्या के धार्मिक एवं सामाजिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि शास्त्रों में हरियाली अमावस्या का महत्वपूर्ण स्थान माना गया है। इस दिन किया गया दान-पुण्य एवं सेवा कार्य विशेष फलदायी माना जाता है। उन्होंने बताया कि पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ परिषद पक्षियों के लिए चबूतरों पर नियमित रूप से अनाज एवं पानी की व्यवस्था कर रही है। शीघ्र ही व्यापक स्तर पर मानव सेवा के नए प्रकल्प भी शुरू किए जाएंगे। इस सेवा एवं पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रम में भीनमाल विकास परिषद के अनेक पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस अवसर पर ओम प्रकाश खेतावत, राजेंद्र छाजेड़, दिनेश भाटी, संदीप देसाई, गौतम सिंघवी, सुरेश सोलंकी, अरविंद माहेश्वरी एवं अशोक धारीवाल सहित कई गणमान्य सदस्य उपस्थित रहे। सभी ने पौधारोपण एवं गौ-सेवा में अपना सराहनीय सहयोग दिया।

# समय की चोट रक्त बहाए बिना गहराई तक असर करती है: मुनि सर्वार्थ सागर जी महाराज

ऋषभ विहार, दिल्ली. शाबाश इंडिया

ऋषभ विहार, दिल्ली में मुनि सर्वार्थ सागर जी महाराज ने प्रवचन में कहा कि समय की चोट रक्त बहाए बिना गहराई तक असर करती है। मुनि सर्वार्थ सागर जी महाराज की परम भक्त मनाली पाटणी ने बताया कि मुनिश्री ने कहा कि हमारे शरीर पर लगी चोट दिखाई देती है। खून निकलता है, दर्द होता है, पट्टी बांधी जाती है और कुछ दिनों बाद घाव भर भी जाता है। लेकिन समय जो चोट देता है, उसका कोई निशान शरीर पर दिखाई नहीं देता। वह चुपचाप इंसान के भीतर उतरती है। उन्होंने कहा कि कभी किसी ने हमें छोड़ दिया, कभी किसी ने हमारा विश्वास तोड़ दिया, कभी मेहनत के बाद भी सफलता नहीं मिली और कभी अपने ही लोगों ने हमारी कीमत नहीं समझी। उस समय लगता है कि अब सब खत्म हो गया। मुनिश्री ने कहा कि याद रखना चाहिए कि समय किसी को एक जगह खड़ा नहीं रखता। आज जो दुख हमें बहुत बड़ा लग रहा है, हो सकता है कुछ वर्षों बाद वही दुख हमारी सबसे बड़ी सीख बन जाए।

**श्री अभिषेक अशोक पाटील**
कार्याध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवा परिषद, कोल्हापुर

# संयम और आत्म साधना के मार्ग पर चलकर जीवों को मोक्ष मार्ग की प्रेरणा दें वही सच्चे गुरु हैं: आचार्य सुन्दर सागर महाराज

**निवाई.शाबाश इंडिया।** आचार्य सुन्दर सागर महाराज ने कहा कि जो राग-द्वेष से रहित वीतराग और सर्वज्ञ परमात्मा हैं, वही सच्चे देव हैं। जो जिनेन्द्र भगवान की वाणी के माध्यम से आत्मकल्याण और मोक्ष का मार्ग दिखाए, वही सच्चा शास्त्र है तथा जो स्वयं संयम और आत्म साधना के मार्ग पर चलकर जीवों को मोक्ष मार्ग की प्रेरणा दें, वही सच्चे गुरु हैं। श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में वर्षायोग के दौरान सकल दिगम्बर जैन समाज के तत्वावधान में विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। चातुर्मास कमेटी के प्रवक्ता विमल जौंला एवं सुनील भाणजा ने बताया कि 18 अगस्त को भगवान नेमीनाथ जी का जन्म एवं तप कल्याणक तथा 19 अगस्त को मोक्ष सप्तमी पर भगवान पार्श्वनाथ जी का मोक्ष कल्याणक महोत्सव मनाया जाएगा। मोक्ष सप्तमी पर गाजे-बाजे के साथ निर्वाण लाडू चढ़ाया जाएगा। स्वतंत्रता दिवस पर सुबह ध्वजारोहण तथा शाम को देशभक्ति गीतों पर आधारित सिंगिंग 2026 प्रतियोगिता होगी। धर्म प्रभावना महिला मंडल की ओर से आजादी की अमर कहानी–झांसी की रानी लघु नाटिका का मंचन किया जाएगा। प्रतियोगिता के लिए पंजीयन शुरू हो चुके हैं। धर्मसभा का संचालन आर्यिका सुलक्ष्य मति माताजी एवं दीदियों ने किया। अष्ट द्रव्यों से आचार्यों की पूजा-अर्चना की गई, जिसमें समाज के अनेक सदस्य उपस्थित रहे।

## राजनीति

# नागरिक कब सुरक्षित होंगे?

**डॉ. प्रियंका सौरभ**

मृत्यु कब, कहाँ और कैसे आएगी, यह अज्ञात है। लेकिन हमारे आसपास ऐसे खतरे लगातार बढ़ रहे हैं, जिन्हें रोका जा सकता है। सड़कों पर गड्ढे हैं, गलियां उबड़-खाबड़ हैं, नालियां और सीवर के मैनहोल खुले हैं, कई जगह सड़कें और पुल क्षतिग्रस्त हैं। कहीं स्कूलों की छतें बच्चों पर गिरती हैं, तो अस्पतालों की छतें भी खतरा बन जाती हैं। स्कूल बसों के हादसे और बारिश के बाद जलभराव आम नागरिक के जीवन को असुरक्षित बना रहे हैं। रोहतक में भारी बारिश के बाद जलभराव में आठ वर्षीय बच्चे की मौत ने फिर सवाल खड़ा किया है कि एक नागरिक के जीवन का मूल्य आखिर कितना है? मानसून हर साल आता है और जल निकासी तथा सड़कों की बदहाली सामने आती है। अधिकारी तैयारियों और सुधारों के दावे करते हैं, लेकिन कुछ घंटों की बारिश इन दावों की पोल खोल देती है। यह ऐसी व्यवस्था का प्रश्न है जिसमें रोकी जा सकने वाली त्रासदियों को दुर्घटना या दुर्भाग्य कहकर टाल दिया जाता है। सबसे चिंताजनक बात यह है कि नागरिक भी इस विफलता को सामान्य मानने लगे हैं। सड़क में गड्ढा है तो कहा जाता है, ''हमेशा से ऐसा ही है।'' फुटपाथ टूटा है तो सलाह मिलती है, ''सावधान रहिए।'' जलभराव को बारिश का स्वाभाविक परिणाम मान लिया जाता है। अस्पताल की बदहाली को भी सामान्य मान लिया जाता है। यह मानसिकता खतरनाक है, क्योंकि जब जोखिम जीवन का सामान्य हिस्सा बन जाता है, तब प्रशासन पर सुधार का दबाव कम हो जाता है। हमें रोकी जा सकने वाली हर त्रासदी को महज दुर्घटना मानकर आगे बढ़ना बंद करना होगा। यदि महीनों से सड़क पर गड्ढा मौजूद है और उसमें गिरकर किसी की मृत्यु होती है, तो सवाल होना चाहिए कि खतरा समय रहते दूर क्यों नहीं किया गया। खुले मैनहोल, असुरक्षित स्कूल भवन, जर्जर पुल, खराब जल निकासी और स्कूलों के आसपास घूमते आवारा पशु केवल प्रशासनिक मुद्दे नहीं, बल्कि जनसुरक्षा के प्रश्न हैं। विडंबना है कि धार्मिक या राजनीतिक विवादों पर घंटों बहस होती है, लेकिन नागरिक सुरक्षा के सवाल जल्दी भुला दिए जाते हैं। किसी बच्चे का खुले सीवर में डूबना क्या केवल स्थानीय खबर है? सरकार जनता के प्रति जवाबदेह है।

## संपादकीय

# लोकसभा की मंजूरी, अब राज्यसभा की बारी

केरल राज्य का नाम बदलकर 'केरलम्' करने की प्रक्रिया ने मंगलवार को चरण पार कर लिया। लोकसभा ने 11 अगस्त 2026 को केरल (नाम परिवर्तन) विधेयक, 2026 को ध्वनिमत से पारित कर दिया। हालांकि अभी इसे संसद की अंतिम मंजूरी नहीं मिली है, क्योंकि विधेयक को राज्यसभा से भी पारित होना बाकी है। इसके बाद राष्ट्रपति की स्वीकृति और आधिकारिक अधिसूचना जारी होने पर नाम परिवर्तन प्रभावी होगा। यह कदम केवल प्रशासनिक बदलाव नहीं, बल्कि मलयालम भाषा, स्थानीय अस्मिता और सांस्कृतिक पहचान से जुड़ा महत्वपूर्ण निर्णय माना जा रहा है। मलयालम में राज्य का नाम लंबे समय से 'केरलम्' ही प्रचलित है। प्रस्ताव के समर्थकों का कहना है कि संविधान की पहली अनुसूची में दर्ज 'केरलम्' नाम को स्थानीय उच्चारण और भाषाई परंपरा के अनुरूप 'केरलम्' किया जाना चाहिए। 'केरलम्' का अर्थ नारियल और 'केरलम्' का अर्थ भूमि या प्रदेश बताया जाता है। इस दृष्टि से 'केरलम्' का अर्थ 'नारियल की भूमि' माना जाता है। राज्य की पहचान नारियल, समुद्री तट और हरित भू-दृश्य से गहराई से जुड़ी होने के कारण यह नाम सांस्कृतिक अर्थ रखता है। इतिहास की दृष्टि से भी केरल की पहचान प्राचीन है। इतिहासकारों के अनुसार इसका संबंध चेरा राजवंश से जोड़ा जाता है। प्राचीन अभिलेखों में 'केरलपुत्र' का उल्लेख मिलता है, जो इस क्षेत्र की पुरानी राजनीतिक और सांस्कृतिक पहचान की ओर संकेत करता है। हालांकि 'केरलम्' शब्द की व्युत्पत्ति को लेकर अलग-अलग ऐतिहासिक मत भी मिलते हैं। 1 नवंबर 1956 को भाषाई आधार पर राज्यों के पुनर्गठन के दौरान केरल राज्य का गठन हुआ। इसी दिन को केरल पिरावी दिवस के रूप में मनाया जाता है। स्वतंत्रता आंदोलन के दौर से ही मलयालम भाषी क्षेत्रों को मिलाकर संयुक्त केरल के गठन की मांग उठती रही थी। राज्य के गठन के बाद भी संविधान में 'केरल' नाम दर्ज रहा, जबकि मलयालम में 'केरलम्' का प्रयोग जारी रहा। नाम परिवर्तन की औपचारिक प्रक्रिया 24 जून 2024 को तेज हुई, जब केरल विधानसभा ने सर्वसम्मति से केंद्र सरकार से राज्य का नाम 'केरलम्' करने का आग्रह किया। इसके बाद केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 24 फरवरी 2026 को प्रस्ताव को मंजूरी दी। राष्ट्रपति ने जून 2026 में विधेयक पर राज्य विधानसभा के विचार मांगे और जुलाई में विधानसभा ने इसे सर्वसम्मति से मंजूरी दी। इसके बाद विधेयक संसद में लाया गया और लोकसभा ने इसे पारित कर दिया। संविधान के अनुच्छेद 3 के तहत किसी राज्य के नाम में बदलाव का अधिकार संसद के पास है। प्रक्रिया में राष्ट्रपति की सिफारिश और संबंधित राज्य विधानमंडल से विचार प्राप्त करना आवश्यक होता है, लेकिन राज्य विधानसभा की राय संसद के लिए बाध्यकारी नहीं होती। नाम बदलने के लिए संविधान के अनुच्छेद 368 के तहत अलग से संविधान संशोधन आवश्यक नहीं होता।

**-राकेश जैन गोदिका**

## परिदृश्य

# जंतर-मंतर से रांची

**निर्मल रानी**

देश इन दिनों छात्र आक्रोश और आंदोलनों के दौर से गुजर रहा है। दिल्ली के जंतर-मंतर पर नीट-यूजी पेपर लीक और राष्ट्रीय परीक्षाओं में कथित अनियमितताओं के खिलाफ जून से चला आंदोलन 25 जुलाई 2026 को केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे और सरकार की सहमति के बाद समाप्त हुआ। इसके कुछ ही दिन बाद झारखंड में जेपीएससी और जेएसएससी परीक्षाओं में अनियमितताओं के खिलाफ 29 जुलाई से रांची के जयपाल सिंह मुंडा स्टेडियम में छात्र आंदोलन शुरू हुआ। दोनों जगह पारदर्शिता और निष्पक्ष जांच की मांगें प्रमुख हैं। दिल्ली की तरह रांची में भी आंदोलनकारियों को जनसमर्थन मिल रहा है। स्वयंसेवी संगठन लंगर चला रहे हैं, दूर-दराज बैठे समर्थक भोजन ऐप से खाना भेज रहे हैं और स्थानीय दुकानदार तथा नागरिक पानी, नाश्ता और भोजन पहुंचा रहे हैं। भोजन की अधिकता को देखते हुए छात्रों ने लोगों से ऑनलाइन भोजन ऑर्डर न करने की अपील भी की, ताकि खाना बर्बाद न हो और जरूरतमंदों तक पहुंचाया जा सके। अनशनरत छात्रों की नियमित स्वास्थ्य जांच के लिए मेडिकल टीमें भी पहुंच रही हैं। दोनों आंदोलनों के बीच सबसे बड़ा विरोधाभास राजनीतिक रवैये को लेकर दिखाई देता है। दिल्ली आंदोलन का विरोध करने वाले कुछ संगठन और विचारधारा से जुड़े लोग रांची के आंदोलन में सक्रिय दिखाई दे रहे हैं। दिल्ली में जिन प्रदर्शनकारियों को देशद्रोही, बदतमीज या विदेशी फंडिंग से प्रेरित बताने जैसी टिप्पणियां की गईं, वही राजनीतिक वर्ग रांची में छात्र आंदोलन को जोरदार समर्थन देता दिखाई दे रहा है। इससे सवाल उठता है कि समर्थन छात्रों की मांगों के प्रति है या झारखंड की हेमंत सोरेन सरकार के विरोध के कारण?

इसी संदर्भ में हिंदुत्व विचारक और केरल भाजपा के पूर्व बौद्धिक प्रकोष्ठ प्रमुख टीजी मोहनदास की जंतर-मंतर आंदोलन को लेकर की गई विवादित टिप्पणियां भी चर्चा में आईं। उन्होंने कहा था कि यदि स्थिति उनके नियंत्रण में होती तो जंतर-मंतर के आसपास कर्फ्यू लगाकर प्रदर्शनकारियों पर गोली चलवाई जाती। उनकी अन्य टिप्पणियों पर भी तीखी आलोचना हुई। बाद में उन्होंने इन बातों को व्यंग्य और संदर्भ से हटाकर पेश किए जाने का दावा किया। रांची आंदोलन में मीडिया की सक्रियता को लेकर भी सवाल उठाए जा रहे हैं। आलोचकों का कहना है कि दिल्ली में जिस आंदोलन को पर्याप्त सकारात्मक कवरेज नहीं मिली, रांची में उसी तरह के छात्र आंदोलन को व्यापक जगह दी जा रही है। इसके पीछे राजनीतिक समीकरणों को कारण बताया जा रहा है। दिल्ली में भाजपा की केंद्र सरकार थी, जबकि झारखंड में झामुमो, कांग्रेस और राजद गठबंधन की सरकार है। हालांकि वास्तविक मांगों और राजनीतिक समर्थन को अलग देखा जाना चाहिए। रांची में 7 अगस्त को एआईएसए की अध्यक्ष नेहा बोरा पर प्रदर्शन के दौरान स्याही फेंकने की घटना ने विवाद को और बढ़ा दिया। पुलिस ने आरोपी युवक को गिरफ्तार किया और बाद में अदालत ने उसे जमानत दे दी। नेहा बोरा ने घटना की निंदा करते हुए आरोप लगाया कि इसके पीछे भाजपा और आरएसएस से जुड़े लोगों का हाथ हो सकता है। इन आरोपों की स्वतंत्र पुष्टि नहीं हुई है। जंतर-मंतर और रांची के आंदोलनों की मांगें भले ही परीक्षा व्यवस्था की पारदर्शिता और छात्रों के भविष्य से जुड़ी हों, लेकिन उनके प्रति प्रतिक्रियाओं में अंतर साफ दिखाई देता है। यही अंतर बताता है कि छात्र आंदोलन का स्वरूप एक हो सकता है, लेकिन उसके राजनीतिक अर्थ निकालने के तरीके अनेक हैं।

# सर्वोदय ही ध्येय, पुण्य से मिले सामर्थ्य का उपयोग सबके मंगल में: युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी

### तपस्या की अनुमोदना में चौबीसी भावा का भव्य आयोजन, महिला मंडलों ने मंगल गीतों से साध्वीद्वय सोम्याश्रीजी एवं नाव्याश्रीजी का किया अभिनंदन

**भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया।** सर्वोदय ही ध्येय है और पुण्य के साथ मिला सामर्थ्य तभी सार्थक है, जब उसका उपयोग केवल स्वयं के लिए नहीं, बल्कि सबके मंगल के लिए हो। श्रमणसंघीय युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी ने बुधवार को शांतिभवन में नवदिवसीय आनंद जन्मोत्सव के अंतर्गत आयोजित विशाल धर्मसभा में आचार्य आनंद ऋषिजी के जीवन-प्रसंगों का उल्लेख करते हुए कहा कि महापुरुष अपने आत्मकल्याण के साथ लोकमंगल को जीवन का उद्देश्य बनाते हैं। युवाचार्यश्री ने कहा कि कई बार व्यक्ति अच्छे कार्य करता है, फिर भी सफलता नहीं मिलती, जबकि गलत कार्य करने वाला सफल होता दिखाई देता है। सही कार्य के साथ साहस और पुरुषार्थ भी जरूरी है। भय और संकोच में व्यक्ति अपनी क्षमता का पूरा उपयोग नहीं कर पाता। परिस्थितियां प्रतिकूल हों, तब भी सही दिशा में आगे बढ़ने का साहस ही पुरुषार्थ को परिणाम तक पहुंचाता है। उन्होंने कहा कि पुण्य हो तो मिट्टी भी सोना बन जाती है और पुण्य न हो तो सोना भी कोयला बन जाता है। जीवन में मिले साधन और अनुकूलता सफलता की गारंटी नहीं हैं। उनका सदुपयोग करने के लिए पुरुषार्थ तथा उसे सही दिशा देने के लिए विवेक और संस्कार जरूरी हैं। आचार्यश्री के जीवन का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि उनके पास आया सामर्थ्य व्यक्तिगत सुविधा तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उन्होंने उसे संघ और साधर्मिक समाज की आवश्यकताओं से जोड़ा। आयंबिल आराधना के लिए आयंबिल खाते की व्यवस्था, धार्मिक शिक्षा के लिए पाठशाला एवं परीक्षा बोर्ड तथा साधु-साध्वी शिक्षण निधि इसी दृष्टि के उदाहरण हैं। साधर्मिकों की सहायता और चिकित्सा सुविधा का उल्लेख करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा कि आनंद ऋषिजी आवश्यकता को पहचानकर उसके स्थायी समाधान की दिशा में प्रेरणा देते थे। आनंद ऋषि हॉस्पिटल भी इसी व्यापक लोकमंगल की भावना का परिणाम है। उनके लिए सेवा किसी व्यक्ति विशेष तक सीमित नहीं थी, बल्कि जहां आवश्यकता हो, वहां सहायता पहुंचाना ही उसका उद्देश्य था। युवाचार्यश्री ने कहा कि महापुरुष की साधना की व्यापकता उसके व्यक्तिगत पुरुषार्थ से नहीं, बल्कि उससे जुड़े सामूहिक कल्याण से पहचानी जाती है। आचार्यश्री ने अपने सामर्थ्य को लोकमंगल का माध्यम बनाया और कुशल संघनायक के रूप में दायित्व निभाया। इस अवसर पर साध्वी सोम्याश्रीजी ने 21 उपवास एवं साध्वी नाव्याश्रीजी ने 10 उपवास के प्रत्याख्यान ग्रहण किए। बड़ी संख्या में तपस्वी भाई-बहनों ने भी युवाचार्यश्री से 3 उपवास, 2 उपवास एवं आयंबिल सहित विविध तप के प्रत्याख्यान ग्रहण किए। इस दौरान साध्वीद्वय की तपस्या के उपलक्ष्य में शांति जैन महिला मंडल की ओर से शांतिभवन में भव्य चौबीसी भावा कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें शहर के सभी महिला मंडलों की महिलाओं ने बड़ी संख्या में उपस्थित होकर मंगल गीतों के माध्यम से साध्वी सोम्याश्रीजी एवं साध्वी नाव्याश्रीजी की तपस्या की अनुमोदना की। कार्यक्रम में यशोदिप्ती मधुकंवरजी, उपप्रवर्तिनी दिव्य ज्योतिजी, महासती सुचेताजी, साध्वी प्रियदर्शनाजी सहित साध्वीवृंद का सान्निध्य रहा। श्रीसंघ के मंत्री नवरतनमल भलावत ने बताया कि गुरुवार को आचार्य आनंद ऋषिजी महाराज की 126वीं जन्मजयंती पर 1008 आयंबिल तप एवं 3-3 सामायिक के साथ जन्मजयंती मनाई जाएगी। उन्होंने बताया कि 15 अगस्त को विशेष प्रवचन एवं बच्चों की फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता तथा 16 अगस्त, रविवार को दोपहर में ''मन की बात युवाचार्यश्री के साथ'' बच्चों का कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा।

# जिला स्तरीय स्वतंत्रता दिवस समारोह के लिए परेड, मार्च पास्ट व सांस्कृतिक कार्यक्रमों की रिहर्सल

(रमेश भार्गव)

**ऐलनाबाद. शाबाश इंडिया।** जिला स्तरीय स्वतंत्रता दिवस समारोह 15 अगस्त को हर्षोल्लास एवं गरिमापूर्ण ढंग से मनाया जाएगा। समारोह की तैयारियों को लेकर बुधवार को शहीद भगत सिंह स्टेडियम में मार्च पास्ट, परेड एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की रिहर्सल की गई। रिहर्सल में विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थियों के साथ-साथ एनसीसी तथा भारत स्काउट एवं गाइड के बच्चों ने हिस्सा लिया। पुलिस अधीक्षक दीपक सहारण ने रिहर्सल का निरीक्षण किया। इस दौरान पुलिस अधीक्षक दीपक सहारण ने कहा कि स्वतंत्रता दिवस देश के लिए गौरव और सम्मान का पर्व है। जिला स्तरीय समारोह में परेड, मार्च पास्ट एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति पूरी गरिमा और अनुशासन के साथ होनी चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों, एनसीसी कैडेट्स, भारत स्काउट एवं गाइड तथा सांस्कृतिक टीमों के प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया। उन्होंने कहा कि परेड एवं मार्च पास्ट में अनुशासन, कदमताल, वेशभूषा और आपसी तालमेल का विशेष महत्व है। सभी प्रतिभागी नियमित रिहर्सल कर छोटी-छोटी कमियों को दूर करते हुए अपनी प्रस्तुति को बेहतर बनाएं। उन्होंने अधिकारियों एवं प्रशिक्षकों को रिहर्सल के दौरान प्रत्येक गतिविधि पर बारीकी से ध्यान देने के निर्देश दिए, ताकि स्वतंत्रता दिवस पर सभी कार्यक्रम आकर्षक एवं प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किए जा सकें। भारत स्काउट एवं गाइड के जिला सचिव तथा परेड के ओवरऑल इंचार्ज सुखदेव सिंह ढिल्लो ने बताया कि परेड, मार्च पास्ट एवं बैंड की सफल प्रस्तुति के उद्देश्य से पुलिस लाइन में नियमित रिहर्सल करवाई जा रही है।

# कलाकुंज जैन मंदिर में 44 दिवसीय पार्श्वनाथ कल्याण स्रोत विधान की तैयारियां तेज, पत्रकार वार्ता में आमंत्रण पत्रिका का विमोचन

**आगरा. शाबाश इंडिया**

श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर, कलाकुंज, मारुति स्टेट, शाहगंज में वात्सल्य सेवा समिति कलाकुंज-अवधपुरी के तत्वावधान में आयोजित होने वाले 44 दिवसीय पार्श्वनाथ कल्याण स्रोत मंदिर विधान को लेकर बुधवार को पत्रकार वार्ता आयोजित की गई। पत्रकार वार्ता में आयोजन समिति के सदस्यों ने विधान की विस्तृत जानकारी देते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा साझा की। इस अवसर पर विधान की आमंत्रण पत्रिका का विधिवत विमोचन भी किया गया। आयोजकों ने बताया कि गणधराचार्य कुंथुसागर जी महाराज एवं क्षुल्लिका सुमैत्री श्रीमाता जी की विशेष अनुकंपा से आयोजित इस धार्मिक एवं आध्यात्मिक आयोजन का शुभारंभ 16 अगस्त को श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ होगा। 44 दिनों तक चलने वाले विधान में भगवान पार्श्वनाथ की आराधना, पूजन एवं धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यम से श्रद्धालु धर्मलाभ प्राप्त करेंगे। विधान को लेकर मंदिर परिसर में तैयारियां जोर-शोर से चल रही हैं। मंदिर परिसर को आकर्षक रूप से सजाने के साथ श्रद्धालुओं के बैठने, पूजन-अर्चन, प्रसाद सहित अन्य आवश्यक व्यवस्थाओं को अंतिम रूप दिया जा रहा है। आयोजक अजय जैन मास्टर ने बताया कि 16 अगस्त को विधान के शुभारंभ अवसर पर विशेष अतिथियों के रूप में राज्यसभा सांसद नवीन जैन, उच्च शिक्षा मंत्री योगेंद्र उपाध्याय, मीनाक्षी वर्मा, पार्षद पीयूष जैन एवं डिप्टी सीएमओ सहित अन्य गणमान्यजन उपस्थित रहेंगे। इसके बाद विधि-विधान एवं मंत्रोच्चार के साथ श्री पार्श्वनाथ विधान का शुभारंभ किया जाएगा। विधान जिनेंद्र जैन शास्त्री द्वारा धार्मिक विधि-विधान से संपन्न कराया जाएगा। वात्सल्य सेवा समिति की अध्यक्ष रश्मि जैन ने बताया कि विधान को भव्य एवं व्यवस्थित बनाने के लिए समिति के सदस्य लगातार तैयारियों में जुटे हैं। बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के पहुंचने की संभावना को देखते हुए उनकी सुविधा के लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं की जा रही हैं। उन्होंने समाजबंधुओं से अधिक से अधिक संख्या में शामिल होकर भगवान पार्श्वनाथ की आराधना एवं धर्मलाभ प्राप्त करने की अपील की। समिति की मंत्री उपासना जैन ने बताया कि विधान के शुभारंभ अवसर पर ध्वजारोहण का सौभाग्य दीपचंद जैन एवं सुलोचना जैन को तथा दीप प्रज्वलन का सौभाग्य नीलिमा जैन एवं नवनीत जैन को प्राप्त होगा। मुख्य मंगल कलश की स्थापना मुनेन्द्र जैन एवं शिखा जैन परिवार द्वारा की जाएगी। उन्होंने बताया कि 44 दिवसीय यह धार्मिक आयोजन श्रद्धा, भक्ति एवं आध्यात्मिक वातावरण से परिपूर्ण रहेगा तथा समाजबंधुओं को भगवान पार्श्वनाथ की आराधना से जुड़कर धर्मलाभ प्राप्त करने का अवसर मिलेगा। इस अवसर पर दीपचंद जैन, अजय जैन मास्टर, नरेंद्र कुमार जैन सीए, दिव्यांशु जैन, राजेंद्र जैन, आगम जैन, मीडिया प्रभारी शुभम जैन, रतिभा जैन, सुनीता जैन, विमलेश जैन सहित आयोजन समिति के सदस्य मौजूद रहे।

**रिपोर्ट: शुभम जैन**

# आर्यिका रत्न सुविज्ञमति माताजी ससंघ का 16 अगस्त को 10वां पावन वर्षायोग चातुर्मास मंगल कलश स्थापना समारोह

## 13 अगस्त से 28 अगस्त तक 16 दिवसीय अखंड शांति विधान का आयोजन

**जयपुर. शाबाश इंडिया**

राजस्थान की राजधानी गुलाबी नगरी के विवेक विहार स्थित श्री आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर में आर्यिका रत्न सुविज्ञमति माताजी ससंघ का 10वां पावन वर्षायोग चातुर्मास मंगल कलश स्थापना महोत्सव समारोह 16 अगस्त, रविवार को आयोजित होगा। सुविज्ञ चातुर्मास समिति के संयोजक नरेश जैन मेड़ता ने बताया कि रविवार को दोपहर 1 बजे से आयोजित समारोह में चित्र अनावरण, दीप प्रज्वलन एवं मंगलाचरण के बाद माताजी का पाद प्रक्षालन किया जाएगा। इसके बाद जिनवाणी एवं वस्त्र भेंट किए जाएंगे। इस अवसर पर आर्यिका माताजी की अष्टद्रव्य के साथ संगीतमय पूजा-अर्चना की जाएगी। माताजी का मंगल प्रवचन भी होगा। अंत में मंत्रोच्चार के साथ चातुर्मास मंगल कलशों की स्थापना की जाएगी। समाज अध्यक्ष अनिल जैन आईआरएस ने बताया कि जैन संत चातुर्मास के दौरान जीव हिंसा से बचने के लिए चार माह तक एक स्थान पर रहकर त्याग एवं तपस्या करते हैं। इस दौरान वे आत्मकल्याण के साथ जनकल्याण का संदेश भी देते हैं। चातुर्मास संयोजक भागचंद पाटनी ने बताया कि आर्यिका रत्न सुविज्ञमति माताजी के सान्निध्य में 13 अगस्त से 28 अगस्त तक प्रतिदिन प्रातः 7 बजे से मंदिर परिसर में 16 दिवसीय अखंड शांति विधान का आयोजन होगा। इसके बाद 29 अगस्त को विश्व महाशांति यज्ञ आयोजित किया जाएगा।

## तीनधार में निःशुल्क भंडारे का शुभारंभ, रामदेवरा यात्रियों को एक माह तक मिलेगा भोजन

**आजाद शेरवानी**

तीनधार चौराहा, रूपारेल, एनएच-52. तीनधार चौराहे पर पिछले 28 वर्षों से आयोजित हो रहे निःशुल्क भंडारे का शुभारंभ बुधवार को हरियाली अमावस्या के अवसर पर हुआ। ग्राम पंचायत एवं आसपास के 40 गांवों के दानदाताओं के सहयोग से आयोजित यह भंडारा एक माह तक चलेगा। इसमें रामदेवरा जाने वाले यात्रियों के लिए निःशुल्क चाय, नाश्ता, भोजन एवं ठहरने की व्यवस्था उपलब्ध कराई जाएगी। भंडारे के पुजारी महाकाल गिरी जी महाराज ने बताया कि यात्रियों की सुविधा को देखते हुए महिला एवं पुरुष यात्रियों के ठहरने के लिए समिति की ओर से अलग-अलग व्यवस्थाएं की गई हैं। भंडारे में यात्रियों को आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए समिति के सदस्य एवं स्वयंसेवक सेवा में जुटे हुए हैं। समिति के मीडिया प्रभारी भारत सिंह मीणा ने तेलियाखेड़ी में यह जानकारी देते हुए बताया कि हर वर्ष की तरह इस बार भी भंडारे का आयोजन श्रद्धालुओं एवं दानदाताओं के सहयोग से किया जा रहा है। एक माह तक चलने वाले इस भंडारे में रामदेवरा यात्रा पर जाने वाले श्रद्धालुओं को सेवा एवं सुविधा उपलब्ध कराने का प्रयास किया जाएगा।

## महिला जागृति संघ ने धार्मिक एवं सांस्कृतिक भावनाओं के साथ मनाया लहरिया उत्सव

**जयपुर. शाबाश इंडिया**

महिला जागृति संघ की सदस्यों की ओर से लहरिया उत्सव धार्मिक एवं सांस्कृतिक भावनाओं के साथ जीरा वाला में हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया। संघ की अध्यक्ष शशी जैन एवं मंत्री शारदा सोनी ने बताया कि उत्सव में करीब 70 सदस्यों ने भाग लिया। कार्यक्रम की शुरूआत सरोज छाबड़ा एवं कुसुम ठोलिया द्वारा मंगलाचरण के साथ हुई। इसके बाद विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने कार्यक्रम में रंग भर दिया। मंजु छाबड़ा ने मोनो एक्टिंग प्रस्तुत कर सभी का मनोरंजन किया। अनिला, कुसुम, बेला, रेखा, रेणु, मंजु पाटनी, तारामणी, रचना एवं विजिया ने नृत्य प्रस्तुतियों के माध्यम से समां बांधा। उपाध्यक्ष साधना काला एवं बेला जैन ने भी कार्यक्रम की व्यवस्थाओं एवं आयोजन को सफल बनाने में सक्रिय योगदान दिया। इस अवसर पर महिलाओं ने पारंपरिक लहरिया परिधान में उत्साहपूर्वक भाग लेकर उत्सव का आनंद लिया।

## ज्ञान गंगा महोत्सव में हमें दुनिया को नहीं, खुद को बदलने का प्रयास करना हैः आचार्य पुलकसागर महाराज

### आचार्यश्री के सान्निध्य में स्वाधीनता दिवस पर सर्व समाज के लिए ज्ञान गंगा महोत्सव का आगाज

**भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया**

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर ट्रस्ट, मैन सेक्टर, शास्त्रीनगर के तत्वावधान में सकल दिगंबर जैन समाज की ओर से भीलवाड़ा में पहली बार चातुर्मास कर रहे राष्ट्र संत मनोज्ञाचार्य पुलकसागरजी महाराज ससंघ के सान्निध्य में 15 अगस्त से ज्ञान गंगा महोत्सव शुरू होगा। इससे पहले शास्त्रीनगर स्थित सूर्यमहल में इन दिनों धर्म की गंगा प्रवाहित हो रही है। आचार्य पुलकसागर महाराज ने बुधवार सुबह सूर्यमहल में धर्म संदेश देते हुए कहा कि जीवन में हमारे कर्म ही तय करते हैं कि पाप या पुण्य में से किसका पलड़ा भारी रहने वाला है। जिनका समय जिनवाणी सुनने में बीतता है, उनका पुण्य प्रबल होता है और जिनका समय मौज-मस्ती में निकल जाता है, उनके जीवन में पाप का पलड़ा भारी होने से प्रतिकूलताएं बढ़ती जाती हैं। उन्होंने कहा कि चातुर्मास आत्मनिरीक्षण और संयम की साधना का पर्व है। पुण्यशाली जीव ही जिनवाणी सुन पाते हैं। हमारे कर्म ही तय करते हैं कि हम भगवान बनेंगे या नरक गति में जाएंगे। कषाय को जीतने के लिए हमें स्वभाव में आना होगा। कसाई दूसरों को मारता है, लेकिन कषाय करके हम अपने कई भव बिगाड़ लेते हैं। मोक्ष पाना है तो निज मार्ग अपनाना होगा, जो हमारी आत्मा के कल्याण का मार्ग है। उन्होंने कहा कि 15 से 30 अगस्त तक चित्रकूटधाम में होने वाले ज्ञान गंगा महोत्सव में शामिल होकर हमें दुनिया को नहीं, खुद को बदलने का प्रयास करना है। महोत्सव में परिवर्तन, चिंतन, जीवन को दिशा देने और स्वयं से मिलने के संदेश दिए जाएंगे। कार्यक्रम की शुरूआत दीप प्रज्वलन, पाद प्रक्षालन एवं शास्त्र भेंट से हुई। इसका सौभाग्य भागचंद, शशिकला, अनिल एवं अभिषेक अजमेरा परिवार, बसंत विहार को प्राप्त हुआ। बुधवार दोपहर जैन समाज के प्रमुख भामाशाह एवं श्रेष्ठी अशोक पाटनी पत्नी सुशीला पाटनी के साथ निजी हेलिकॉप्टर से भीलवाड़ा पहुंचे। चातुर्मास समिति के अध्यक्ष प्रवीण चौधरी, संयोजक मनीष शाह, सह संयोजक लोकेश अजमेरा सहित समाज के प्रमुख पदाधिकारियों एवं श्रावकों ने उनका स्वागत किया। पाटनी दंपति ने आचार्यश्री के दर्शन-वंदन कर विभिन्न विषयों पर धर्म चर्चा की और आशीर्वाद प्राप्त किया। उन्होंने भीलवाड़ा में पहली बार हो रहे चातुर्मास पर प्रसन्नता जताते हुए समिति की सेवाओं की सराहना की। चातुर्मास समिति के अध्यक्ष प्रवीण चौधरी ने बताया कि तेरापंथ संघ भीलवाड़ा के अध्यक्ष अशोक सिंघवी ने कमेटी सदस्यों एवं महिला मंडल के साथ आचार्यश्री के दर्शन कर श्रीफल भेंट किया तथा तेरापंथ भवन में मंगल प्रवचन का निवेदन किया।

# अक्षय (पारुल) जैन के नेत्रदान से दो लोगों के जीवन में आएगी रोशनी

**कुचामन सिटी. शाबाश इंडिया।** महावीर इंटरनेशनल एवं श्री जैन वीर मंडल की प्रेरणा से कुचामन सिटी में एक परिवार ने कठिन परिस्थितियों के बीच साहसिक निर्णय लेते हुए नेत्रदान कर मानवता की मिसाल पेश की। 31 वर्षीय अक्षय (पारुल) जैन, पुत्र पवन कुमार पांड्या, की गुरुवार सुबह अचानक तबीयत बिगड़ने पर परिजन उन्हें राजकीय चिकित्सालय लेकर पहुंचे, जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। परिवार पर अचानक आए इस दुखद संकट के बीच परिजनों ने सामाजिक कार्यकर्ताओं की प्रेरणा तथा ''जीओ और जीने दो'' की भावना से प्रेरित होकर अक्षय जैन के नेत्रदान का निर्णय लिया। सूचना मिलने पर अजमेर आई बैंक की टीम के डॉ. भरत शर्मा एवं उनकी टीम पारुल जैन के निवास पर पहुंची और नेत्रदान की प्रक्रिया संपन्न करवाई। नेत्रदान के माध्यम से 2 जरूरतमंद नेत्रहीन व्यक्तियों के जीवन में रोशनी आने की संभावना है, जिससे उन्हें दुनिया देखने का अवसर मिल सकेगा। इस पुनीत कार्य के दौरान नेत्रदानी परिवार की ओर से सुरेशकुमार, पवन कुमार, अनिल कुमार, हेमंत, अंकित, वीर कैलाश, वीर महावीर, वीर संदीप पांड्या, वीर अशोक अजमेरा, वीर अजित, पहाड़िया विकास, अशोक, मनोज जैन एवं वीर सुरेंद्र सिंह दीपपुरा सहित परिजनों तथा विभिन्न संस्थाओं के सामाजिक कार्यकर्ताओं ने डॉ. भरत शर्मा को नेत्र सुपुर्द किए। महावीर इंटरनेशनल के वीर सुभाष पहाड़िया एवं वीर रामावतार गोयल ने इस महान सेवाकार्य के लिए पांड्या परिवार के प्रति साधुवाद एवं आभार व्यक्त करते हुए कहा कि नेत्रदान महादान है। पारुल जैन के नेत्र 2 जरूरतमंद लोगों के जीवन में रोशनी लाने का माध्यम बनेंगे। दुख की घड़ी में परिवार द्वारा लिया गया यह निर्णय समाज के लिए प्रेरणादायी है। – वीर सुभाष पहाड़िया

# जो स्वयं को ज्ञानी और गुरु को अज्ञानी माने, उसका कभी कल्याण नहीं हो सकता

**इंदौर. शाबाश इंडिया।** राष्ट्रसंत सुधासागर जी महाराज ने बुधवार को सकल दिगंबर जैन धर्म प्रभावना समिति के तत्वावधान में दलाल बाग स्थित विद्या सुधा सत्संग मंडप में धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि आज हर व्यक्ति स्वयं को श्रेष्ठ, ज्ञानी एवं महान मानना चाहता है, यही उसकी सबसे बड़ी भूल है। मुनिश्री ने कहा कि हीरा स्वयं अपने मूल्य का बखान नहीं करता। यदि कोई हीरा स्वयं को असली और कस्तूरी स्वयं को सुगंधित बताने लगे तो समझ लेना चाहिए कि वह नकली है। इसी प्रकार जो व्यक्ति स्वयं को ज्ञानी और गुरु को अज्ञानी मानता है, उसका कभी कल्याण नहीं हो सकता। धर्म समाज प्रचारक राजेश जैन दद्दू ने बताया कि मुनिश्री ने कहा कि ज्ञान प्राप्त करना है तो ज्ञानी पुरुष के सामने स्वयं को कोरी स्लेट बनाकर जाना चाहिए। देव, शास्त्र और गुरु के प्रति किए गए सेवा कार्य का अहंकार नहीं करना चाहिए। मंदिर, सत्संग और गुरु के समक्ष विनम्र भाव से जाने पर ही ज्ञान की प्राप्ति संभव है। उन्होंने कहा कि 3 प्रकार के लोगों का कल्याण कठिन है– जो गुरु के सामने स्वयं को ज्ञानी मानते हैं, शास्त्र के सामने स्वयं को विद्वान समझते हैं और जो न गुरु को मानते हैं, न गुरु की मानते हैं। सच्चे गुरु के मुख से निकला प्रत्येक शब्द मंत्र के समान होता है। धर्मसभा में राहुल सेठी, आनंद नवीन गोधा, रानी अशोक डोसी, भूपेंद्र जैन सहित अनेक श्रेष्ठी उपस्थित रहे। संचालन अनुराग जैन ने किया।

# रामपुरा गुंदा का बाला विद्यालय में जे.एस.जी. सनसाइन संगिनी क्लब ने बांटी स्टेशनरी

**ब्यावर. शाबाश इंडिया**

जे.एस.जी. सनसाइन संगिनी क्लब की ओर से सामाजिक सरोकार के तहत राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, रामपुरा गुंदा का बाला में विद्यार्थियों को स्टेशनरी वितरित की गई। इस अवसर पर क्लब सदस्यों ने विद्यालय परिसर में पौधरोपण भी किया। क्लब सचिव सीमा सांखला ने बताया कि क्लब अध्यक्ष सुमीता बाबेल की प्रेरणा से आयोजित कार्यक्रम में विद्यालय के सभी विद्यार्थियों को करीब 25 हजार रुपए की स्टेशनरी वितरित की गई। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को शिक्षा के प्रति प्रोत्साहित करने के साथ पर्यावरण संरक्षण का संदेश देना रहा। कार्यक्रम में धीरज जैन ने क्लब की आगामी कार्ययोजना की जानकारी दी। क्लब अध्यक्ष सुमीता बाबेल ने पौधरोपण के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि विद्यार्थी जीवन में अनुशासन ही सफलता की कुंजी है। उन्होंने विद्यालय के भौतिक विकास में भी आगामी दिनों में सहयोग करने का आश्वासन दिया। इस अवसर पर नमिता नाहटा, पारुल जैन, राखी सांखला, गौरी नाबेडा, रश्मि बाबेल, पिंकी कासलीवाल, संतोष कटारिया, पीयूष बाबेल, सुरेंद्र शर्मा, नेहा छाबड़ा, सीता कुमारी सहित क्लब के सदस्य एवं विद्यालय परिवार के सदस्य उपस्थित रहे।

# एक संकल्प, अनेक जीवन: श्री वर्द्धमान कन्या महाविद्यालय में अंगदान पर जागरूकता व्याख्यान

**ब्यावर. शाबाश इंडिया**

श्री वर्द्धमान शिक्षण समिति द्वारा संचालित श्री वर्द्धमान कन्या पी.जी. महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना एवं रेड रिबन क्लब के संयुक्त तत्वावधान में भारत सरकार के राष्ट्रीय अंग एवं ऊतक प्रत्यारोपण संगठन द्वारा संचालित देशव्यापी ''अंगदान-जीवन संजीवनी अभियान'' के तहत विशेष जागरूकता व्याख्यान आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार मंत्र एवं मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन और माल्यार्पण के साथ हुआ। मुख्य वक्ता व्याख्याता लवीना ज्ञानचंदानी ने अंगदान की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ''अंगदान ही सच्चा जीवनदान है।'' उन्होंने बताया कि एक व्यक्ति द्वारा सेवाभाव से किया गया अंगदान कई जरूरतमंद लोगों को नया जीवन प्रदान कर सकता है। उन्होंने छात्राओं को अंगदान को लेकर समाज में व्याप्त भ्रांतियों को दूर करने तथा अधिक से अधिक लोगों को जागरूक करने के लिए प्रेरित किया। महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. आर. सी. लोढ़ा ने अंगदान को मानवीय सेवा का सर्वोच्च कार्य बताते हुए छात्राओं से आह्वान किया कि वे अंगदान के इस पवित्र संदेश को घर-घर तक पहुंचाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं। राष्ट्रीय सेवा योजना अधिकारी प्रीति शर्मा ने अंगदान की प्रक्रिया, कानूनी प्रावधानों एवं अंगदान पंजीकरण के संबंध में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने छात्राओं को अंगदान के लिए संकल्प-पत्र भरने हेतु भी प्रेरित किया। इस अवसर पर महाविद्यालय का समस्त शैक्षणिक एवं अशैक्षणिक स्टाफ तथा बड़ी संख्या में छात्राएं उपस्थित रहीं। कार्यक्रम के अंत में राष्ट्रीय सेवा योजना अधिकारी कोमल गुप्ता ने अतिथियों, वक्ताओं एवं छात्राओं के प्रति आभार व्यक्त किया। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

# जैन सोशल ग्रुप कैपिटल के 125 सदस्यों ने किया गलता का भ्रमण

**जयपुर. शाबाश इंडिया**

जैन सोशल ग्रुप कैपिटल, जयपुर की ओर से गलता तीर्थ भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। संयोजक विनोद-सुधा जैन एवं शांति-बीना पाटनी के नेतृत्व में आयोजित कार्यक्रम में करीब 125 युवा, पुरुष एवं महिला सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम में भक्ति, प्रकृति एवं मनोरंजन का संगम देखने को मिला। भ्रमण के दौरान सदस्यों ने मार्ग में आने वाले विभिन्न मंदिरों के दर्शन किए तथा गलता तीर्थ स्थित कुंड में स्नान कर धर्मलाभ प्राप्त किया। हल्की बारिश के बीच सदस्यों ने छतरियां लेकर गलता की सीढ़ियों पर भजन-गायन एवं नृत्य का आनंद लिया। इस दौरान बंदरों को केले एवं चने भी खिलाए गए। भ्रमण के पश्चात सभी सदस्यों के लिए नाश्ते की व्यवस्था की गई। इसके बाद बावड़ी परिसर में सामूहिक भोज का आयोजन हुआ, जिसमें सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान नॉर्दर्न रीजन द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले सदस्यों को संस्थापक अध्यक्ष की ओर से पारितोषिक प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में वीरेंद्र-सुनीता काला ने पूर्ण सहयोग प्रदान किया। आयोजन के दौरान सदस्यों ने आपसी मेलजोल, भक्ति एवं मनोरंजन के साथ भ्रमण का भरपूर आनंद लिया।

# मुर्शिदाबाद जिला दिगंबर जैन समाज का अधिवेशन संपन्न

**बहरमपुर, पश्चिम बंगाल. शाबाश इंडिया**

मुर्शिदाबाद जिला दिगंबर जैन समाज का वर्ष का प्रथम अधिवेशन मंगलवार को बहरमपुर में संपन्न हुआ। अधिवेशन में जिला समाज की पिछली कार्यकारिणी द्वारा आय-व्यय का हिसाब प्रस्तुत किया गया। इसके साथ ही विभिन्न सुझावों एवं प्रस्तावों पर विचार-विमर्श कर आवश्यक निर्णय लिए गए। समाज के पदाधिकारियों ने बताया कि जिले के सभी गांव अंतर्मना आचार्य प्रसन्न सागर जी महाराज की प्रेरणा से वर्ष 2002 से एक सूत्र में जुड़े हुए हैं। समाज की ओर से सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन के लिए रात्रि विवाह, मृतक भोज एवं भेंट प्रथा को पूर्ण रूप से वर्जित किया गया है। जिला समाज की ओर से श्री सम्मेद शिखरजी में त्यागी-व्रती साधुओं के लिए निःशुल्क चौका भी सुचारू रूप से संचालित किया जा रहा है। इसके साथ ही समाज में आपसी एकता एवं भाईचारे को मजबूत करने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष मिलन उत्सव के रूप में सामूहिक क्षमावाणी उत्सव मनाया जाता है। पदाधिकारियों ने कहा कि मुर्शिदाबाद जिला दिगंबर जैन समाज की एकता

एवं अखंडता पूरे विश्व में समाज के लिए एक नजीर है। अधिवेशन के दौरान समाजहित से जुड़े विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई तथा भविष्य की गतिविधियों को लेकर भी विचार-विमर्श हुआ। अंत में सामूहिक नमोकार मंत्र के साथ अधिवेशन का समापन हुआ।

**संकलन : संजय कुमार जैन बड़जात्या**

# युवा और वायु: गति, ऊर्जा और स्वतंत्रता का प्रतीक

डॉ. विजय गर्ग

युवा जीवन का वह चरण है जिसमें ऊर्जा, उत्साह, सपने और कुछ नया करने की अदम्य इच्छा सबसे अधिक दिखाई देती है। युवा केवल उम्र की पहचान नहीं है, बल्कि यह सोचने, आगे बढ़ने, परिवर्तन स्वीकार करने और नई राह बनाने की मानसिकता का नाम है। इसी कारण युवा शक्ति की तुलना वायु से की जा सकती है–वायु गतिशील है, स्वतंत्र है और उसे लंबे समय तक किसी सीमा में बाँधकर नहीं रखा जा सकता। वायु दिखाई नहीं देती, लेकिन उसका प्रभाव हर जगह महसूस होता है। वह पेड़ों की पत्तियों को हिलाती है, बादलों को आगे बढ़ाती है और वातावरण में जीवन का संचार करती है। उसी प्रकार युवा शक्ति हमेशा दिखाई दे, यह आवश्यक नहीं, लेकिन जब युवा अपने विचारों, प्रतिभा और कर्मठता के साथ आगे बढ़ते हैं तो समाज में परिवर्तन की हलचल स्पष्ट दिखाई देने लगती है।

## युवा और गति का संबंध

युवा ठहराव के बजाय गति का प्रतीक हैं। वे पुराने तरीकों पर प्रश्न उठाते हैं और नए समाधान खोजने का साहस रखते हैं। तकनीक, विज्ञान, शिक्षा, खेल, कला, उद्यमिता और सामाजिक सेवा–हर क्षेत्र में युवाओं की ऊर्जा नई संभावनाओं के द्वार खोलती है लेकिन केवल तेज गति पर्याप्त नहीं है। वायु यदि संतुलित हो तो जीवनदायिनी है, परंतु अत्यधिक वेग विनाशकारी भी हो सकता है। इसी प्रकार युवा ऊर्जा को सही दिशा, अनुशासन और विवेक की आवश्यकता होती है। ऊर्जा जितनी बड़ी हो, दिशा का महत्व उतना ही अधिक होता है।

## स्वतंत्रता का अर्थ जिम्मेदारी भी है

वायु को कोई स्थायी रूप से रोक नहीं सकता। वह अपना रास्ता खोज लेती है। युवा मन भी स्वतंत्र विचार चाहता है। वह प्रश्न पूछना, अपनी पसंद चुनना और अपने भविष्य का निर्माण करना चाहता है। यह स्वतंत्रता समाज की प्रगति के लिए आवश्यक है लेकिन स्वतंत्रता का अर्थ मनमानी नहीं है। वास्तविक स्वतंत्रता वही है जिसमें व्यक्ति अपने अधिकारों के साथ अपनी जिम्मेदारियों को भी समझता है। युवा यदि स्वतंत्र सोच के साथ अनुशासन, संवेदनशीलता और सामाजिक जिम्मेदारी को जोड़ लें, तो उनकी शक्ति रचनात्मक परिवर्तन का माध्यम बन सकती है।

## युवा ऊर्जा को दिशा क्यों चाहिए?

हर युवा के भीतर प्रतिभा और संभावनाएँ होती हैं, लेकिन हर प्रतिभा अपने आप सफलता में नहीं बदलती। इसके लिए शिक्षा, मार्गदर्शन, अवसर और सकारात्मक वातावरण आवश्यक हैं। परिवार को युवाओं पर केवल अपनी अपेक्षाएँ थोपने के बजाय उनकी रुचियों और क्षमताओं को समझना चाहिए। विद्यालयों और संस्थानों को भी केवल परीक्षा और अंकों पर ध्यान देने के बजाय रचनात्मकता, समस्या-समाधान, संवाद और जीवन-कौशल को महत्व देना चाहिए। युवा यदि अपनी ऊर्जा को केवल मनोरंजन या तात्कालिक उपलब्धियों तक सीमित कर दें, तो उनकी क्षमता का बड़ा हिस्सा अनछुआ रह सकता है। इसके विपरीत, यदि वे ज्ञान, कौशल, स्वास्थ्य, रचनात्मकता और समाजसेवा में अपनी ऊर्जा लगाएँ, तो वे स्वयं के साथ-साथ समाज का भविष्य भी बदल सकते हैं।

## युवा परिवर्तन की हवा हैं

इतिहास में बड़े सामाजिक और वैज्ञानिक परिवर्तन अक्सर उन लोगों ने आगे बढ़ाए जिन्होंने प्रचलित सोच को चुनौती देने का साहस किया। आज भी दुनिया को ऐसे युवाओं की आवश्यकता है जो केवल नौकरी पाने की चिंता न करें, बल्कि नए विचार पैदा करें; केवल समस्याओं की चर्चा न करें, बल्कि समाधान खोजें; केवल अपने भविष्य के बारे में न सोचें, बल्कि समाज और प्रकृति के भविष्य की भी चिंता करें। आज का युवा डिजिटल दुनिया से जुड़ा हुआ है। उसके पास सूचना के विशाल स्रोत हैं। लेकिन सूचना और ज्ञान एक ही चीज नहीं हैं। युवाओं को यह सीखना होगा कि वे तकनीक का उपयोग अपने विकास के लिए करें, न कि तकनीक उन्हें नियंत्रित करने लगे।

## वायु की तरह बनें, तूफान की तरह नहीं

युवा शक्ति को वायु से प्रेरणा लेनी चाहिए। वायु गतिशील है, लेकिन जीवन के लिए आवश्यक भी है। वह अपना रास्ता बनाती है, लेकिन प्रकृति के संतुलन का हिस्सा भी है। युवाओं की ऊर्जा भी ऐसी होनी चाहिए–तेज, स्वतंत्र और परिवर्तनकारी, लेकिन साथ ही संवेदनशील और जिम्मेदार। युवा किसी भी समाज की सबसे बड़ी संभावनाओं में से एक हैं। यदि उन्हें सही शिक्षा, अवसर और विश्वास मिले तो वे असंभव दिखाई देने वाली चुनौतियों को भी नई दृष्टि से देख सकते हैं। युवा और वायु के बीच यही सबसे सुंदर समानता है–दोनों गति, ऊर्जा और स्वतंत्रता के प्रतीक हैं। वायु को कैद नहीं किया जा सकता और सच्चे युवा विचारों को भी लंबे समय तक सीमित नहीं किया जा सकता। उन्हें केवल सही दिशा देने की आवश्यकता है क्योंकि जब युवा शक्ति सकारात्मक दिशा में बहती है, तो वह केवल परिवर्तन की हवा नहीं बनती–वह परिवर्तन की आँधी बनकर समाज की जड़ता को हिला देती है और भविष्य के लिए नई राह तैयार करती है।

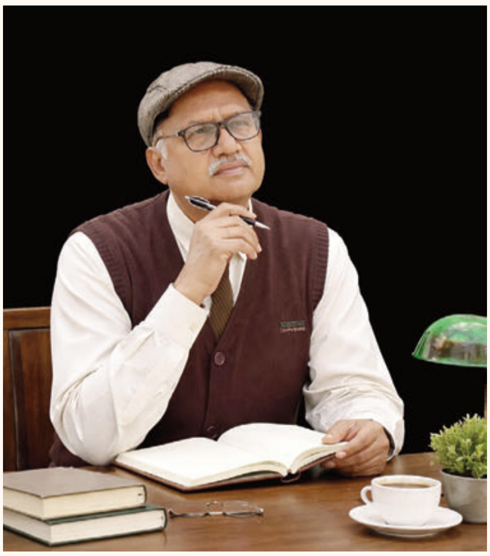

-डॉ. विजय गर्ग
सेवानिवृत्त प्राचार्य, शिक्षाविद् एवं शिक्षा स्तंभकार

# माँ की ममता का कोई मोल नहीं

माँ यह केवल दो अक्षरों से बना एक छोटा-सा शब्द है, लेकिन इसके भीतर पूरी दुनिया की ममता, प्रेम, त्याग, करुणा, वात्सल्य और समर्पण समाया हुआ है। संसार में अनेक रिश्ते हैं, हर रिश्ते की अपनी महत्ता है, लेकिन माँ और संतान का रिश्ता सबसे अनमोल और सबसे पवित्र माना जाता है। माँ वह है, जो अपने बच्चे को जन्म देने से पहले ही उससे प्रेम करने लगती है और जीवन के अंतिम क्षण तक उसकी चिंता करती रहती है। माँ की ममता का न कोई मूल्य लगाया जा सकता है और न ही उसे किसी तराजू में तौला जा सकता है। माँ बच्चे की पहली गुरु होती है। बच्चा जब इस संसार में आता है तो उसे न भाषा का ज्ञान होता है, न संसार की समझ। माँ ही उसकी पहली आवाज बनती है, उसकी पहली पाठशाला बनती है और उसके जीवन की पहली शिक्षिका बनकर उसे चलना, बोलना, व्यवहार करना और दूसरों का सम्मान करना सिखाती है। माँ की गोद बच्चे के लिए संसार का सबसे सुरक्षित स्थान होती है।

## माँ का प्रेम निःस्वार्थ होता है...

दुनिया में अधिकांश रिश्तों में कहीं न कहीं अपेक्षाएं जुड़ी होती हैं, लेकिन माँ का प्रेम अपेक्षाओं से परे होता है। बच्चा कितना भी बड़ा क्यों न हो जाए, उसके लिए माँ की चिंता कम नहीं होती। बेटा दूर किसी शहर में रहता हो तो माँ को उसकी चिंता रहती है—उसने खाना खाया या नहीं, समय पर सोया या नहीं, तबीयत ठीक है या नहीं। बेटी अपने घर चली जाए तो भी माँ की चिंता उसके साथ रहती है। माँ के लिए संतान की उम्र बढ़ सकती है, लेकिन उसकी चिंता कभी बूढ़ी नहीं होती। माँ बच्चे की सफलता में सबसे अधिक खुश होती है और उसकी असफलता में सबसे पहले उसका हाथ पकड़ती है। दुनिया भले ही असफल व्यक्ति से दूरी बना ले, लेकिन माँ अपने बच्चे को असफल नहीं मानती। वह कहती है—कोई बात नहीं, फिर कोशिश करना। यही माँ की ममता की सबसे बड़ी शक्ति है।

## माँ का त्याग शब्दों में नहीं लिखा जा सकता

माँ अपने बच्चों के लिए जीवनभर अनेक त्याग करती है। कभी अपनी इच्छाएँ छोड़ देती है, कभी अपनी नींद, कभी अपनी सुविधा और कभी अपने सपने भी। बच्चे के लिए वह रात-रात भर जागती है। बच्चे की बीमारी में उसकी आँखों से नींद गायब हो जाती है। बच्चे को भूख लगी हो तो वह अपनी भूख भूल जाती है। बच्चे को ठंड लग रही हो तो माँ अपने आँचल से उसे ढक देती है। बच्चे को कोई परेशानी हो तो उसका दर्द माँ स्वयं महसूस करती है। माँ के त्याग का सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है कि बच्चे बड़े होकर अक्सर उन त्यागों को भूल जाते हैं। जिस माँ ने उन्हें उंगली पकड़कर चलना सिखाया, उसी माँ की उंगली पकड़ने का समय कई बार बच्चे के पास नहीं होता।

## माँ अपने बच्चों को संस्कार देती है

माँ केवल बच्चे का पालन-पोषण नहीं करती, बल्कि उसके व्यक्तित्व का निर्माण करती है। वह उसे सिखाती है कि बड़ों का सम्मान कैसे करना है, छोटों से प्रेम कैसे करना है, जरूरतमंद की सहायता कैसे करनी है और कठिन परिस्थितियों में धैर्य कैसे रखना है।

## माँ की कही छोटी-छोटी बातें जीवन में बड़े सिद्धांत बन जाती हैं...

किसी का दिल मत दुखाना।
बड़ों का सम्मान करना।
मेहनत से कभी पीछे मत हटना।
मुश्किल समय में घबराना नहीं।
ये साधारण वाक्य नहीं होते, बल्कि जीवनभर साथ चलने वाले संस्कार होते हैं। इसीलिए कहा जाता है कि किसी भी समाज और राष्ट्र के निर्माण में माँ की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। एक संस्कारी माँ एक संस्कारी परिवार बनाती है और संस्कारी परिवार एक बेहतर समाज का निर्माण करता है।

## माँ की ममता उम्र नहीं देखती

बच्चा चाहे 5 वर्ष का हो या 50 वर्ष का, माँ की नजर में वह बच्चा ही रहता है। यही माँ के प्रेम की अद्भुत विशेषता है। जब बेटा नौकरी पर जाने लगता है, माँ फिर भी पूछती है—खाना खा लिया? जब बेटा विवाह कर लेता है, माँ पूछती है—समय पर घर पहुँच जाना। जब बेटा स्वयं पिता बन जाता है, तब भी माँ उसके स्वास्थ्य और सुख की चिंता करती रहती है। बच्चे के बाल सफेद हो जाते हैं, लेकिन माँ की आँखों में वह आज भी वही बच्चा रहता है, जिसे उसने कभी अपनी गोद में खिलाया था।

## वृद्धावस्था में माँ को हमारी जरूरत होती है

जीवन का सबसे बड़ा विरोधाभास यही है कि बचपन में हमें माँ की जरूरत होती है और वृद्धावस्था में माँ को हमारी जरूरत होती है। जब हम छोटे थे, माँ ने हमारी हर आवश्यकता का ध्यान रखा। हमारे रोने पर वह दौड़कर आती थी। हमारे बीमार होने पर रातभर जागती थी। हमारे स्कूल जाने से लेकर हमारे भविष्य की चिंता तक उसने अपना जीवन लगा दिया लेकिन जब माँ वृद्ध हो जाती है, तो उसकी चाल धीमी हो जाती है, सुनने और देखने की क्षमता कम हो सकती है, शरीर पहले जैसा साथ नहीं देता। उस समय उसे महंगे उपहारों से अधिक समय, सम्मान और अपनापन चाहिए। उसे यह महसूस होना चाहिए कि वह परिवार पर बोझ नहीं है, बल्कि परिवार की सबसे महत्वपूर्ण सदस्य है। वृद्ध माँ को यह नहीं चाहिए कि बेटा हर दिन उसके लिए बड़ी-बड़ी चीजें खरीदे। उसे तो बस इतना चाहिए कि बेटा कुछ देर उसके पास बैठे, उसकी बातें सुने, उसका हाथ थामे और प्यार से पूछे—माँ, आज कैसी हो? कई बार ये छोटे-से शब्द माँ के लिए दुनिया की सबसे बड़ी खुशी बन जाते हैं।

## माँ को वृद्धाश्रम नहीं, परिवार का प्यार चाहिए

आज बदलते सामाजिक परिवेश में वृद्ध माता-पिता की उपेक्षा एक गंभीर विषय बनता जा रहा है। व्यस्त जीवन, नौकरी, आर्थिक दबाव और पारिवारिक परिस्थितियों के बीच कई लोग अपने माता-पिता को पर्याप्त समय नहीं दे पाते। वृद्धाश्रम कुछ परिस्थितियों में आवश्यक सहारा हो सकते हैं, लेकिन जिस माँ ने अपना पूरा जीवन परिवार को दिया हो, उसके लिए अपने ही घर में सम्मान और अपनापन सबसे बड़ा सहारा है। हमें यह विचार करना चाहिए कि जिस माँ ने बचपन में हमें कभी अकेला नहीं छोड़ा, क्या वृद्धावस्था में उसे अकेला छोड़ देना उचित है?

## माँ की ममता का ऋण चुकाया नहीं जा सकता

हम चाहे कितनी भी सेवा कर लें, माँ के त्याग का पूरा ऋण कभी नहीं चुका सकते। हम उसके लिए घर बना सकते हैं, सुविधाएँ दे सकते हैं, दवाइयाँ ला सकते हैं, लेकिन उसके द्वारा हमारे लिए किए गए त्याग का मूल्य निर्धारित नहीं कर सकते। माँ ने हमें जीवन दिया। उसने हमारी पहली मुस्कान देखी, हमारे पहले कदम देखे, हमारी पहली सफलता पर गर्व किया और हमारी असफलताओं में हमारा साथ दिया। इसलिए माँ के प्रति हमारा दायित्व केवल आर्थिक नहीं, बल्कि भावनात्मक भी है।

## माँ की एक मुस्कान अनमोल है

माँ के चेहरे पर मुस्कान देखना किसी भी संतान के लिए सौभाग्य की बात है। जिस माँ ने जीवनभर हमारे चेहरे पर मुस्कान लाने का प्रयास किया, अब हमारी जिम्मेदारी है कि उसके चेहरे पर चिंता नहीं, संतोष की रेखाएँ हों। उसे यह विश्वास होना चाहिए कि उसके बच्चे उसके साथ हैं। कभी उसके पास बैठना, उसके पुराने दिनों की बातें सुनना, उसके अनुभवों को सम्मान देना, उसके साथ भोजन करना और उसके हाथों का स्पर्श महसूस करना—ये सभी बातें माँ के जीवन को सुख से भर सकती हैं।

## माँ की यादें जीवनभर साथ रहती हैं

माँ हमेशा हमारे साथ नहीं रहती। जीवन का सत्य है कि एक दिन हमें माँ से बिछड़ना पड़ता है। उस समय उसके दिए संस्कार, उसकी बातें, उसका प्यार और उसकी यादें ही हमारे साथ रहती हैं। कई लोग माँ के जाने के बाद कहते हैं—काश, हम उनके साथ थोड़ा और समय बिताते। लेकिन तब समय वापस नहीं आता। इसलिए जब माँ हमारे साथ है, तभी उसके प्रेम का सम्मान करना चाहिए। उसकी सेवा करने के लिए किसी विशेष दिन या अवसर की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए।

## मातृ दिवस केवल एक दिन नहीं

आज हम मातृ दिवस पर माँ को शुभकामनाएँ देते हैं, फूल देते हैं और सामाजिक माध्यमों पर तस्वीरें लगाते हैं। यह अच्छी बात है, लेकिन माँ के प्रति हमारा सम्मान केवल एक दिन तक सीमित नहीं होना चाहिए।
माँ के लिए हर दिन विशेष हो सकता है।
एक फोन कॉल,
एक प्यार भरा संदेश,
कुछ समय साथ बैठना,
उसकी बात ध्यान से सुनना,
उसकी जरूरत समझना—
ये छोटी-छोटी चीजें माँ के लिए बहुत बड़ी होती हैं।
माँ वास्तव में ईश्वर का दिया हुआ वरदान है।
भारतीय संस्कृति में माँ को ईश्वर के समान सम्मान दिया गया है। मातृ देवो भव की भावना हमारे संस्कारों में गहराई से जुड़ी हुई है। माँ के रूप में हमें केवल एक रिश्ता नहीं मिलता, बल्कि जीवनभर का प्रेम, मार्गदर्शन और आशीर्वाद मिलता है। माँ घर की वह धुरी है, जिसके आसपास परिवार की भावनाएँ घूमती हैं। उसकी उपस्थिति घर में अपनापन पैदा करती है। उसकी आवाज घर को घर बनाती है और उसकी दुआएँ बच्चों के जीवन को शक्ति देती हैं। माँ की ममता वास्तव में अनमोल है। दुनिया की कोई संपत्ति, कोई पुरस्कार, कोई पद और कोई धन माँ के प्रेम की बराबरी नहीं कर सकता। माँ ने हमारे बचपन को संभाला, हमारी जवानी को दिशा दी और हमारे जीवन की नींव मजबूत की। अब जब माँ को हमारी जरूरत है, तो हमारा कर्तव्य है कि हम उसके साथ खड़े रहें। माँ को केवल प्रणाम करने की नहीं, उसे समझने की जरूरत है। माँ को केवल उपहार देने की नहीं, उसे समय देने की जरूरत है। माँ को केवल सम्मान देने की नहीं, उसे सम्मान के साथ जीने का अवसर देने की जरूरत है। जिस घर में माँ मुस्कुराती है, वहाँ खुशियाँ अपने आप चली आती हैं। जिस घर में माँ का सम्मान होता है, वहाँ संस्कार पीढ़ियों तक जीवित रहते हैं और जिस हृदय में माँ के लिए सम्मान होता है, वह हृदय कभी गरीब नहीं होता। माँ का प्रेम समुद्र से भी गहरा और आकाश से भी विशाल है। उसे न खरीदा जा सकता है, न उसका मूल्य लगाया जा सकता है। सच ही कहा गया है...
माँ की ममता का कोई मोल नहीं,
माँ के आँचल से बढ़कर कोई अनमोल नहीं।

-अनिल माथुर: ज्वाला-विहार, जोधपुर

# जनकपुरी में आचार्य आदित्य सागर ने समझाया सच्चे देव, शास्त्र और गुरु का स्वरूप

**जयपुर. शाबाश इंडिया**

जनकपुरी-ज्योतिनगर स्थित श्री दिगंबर जैन मंदिर में चातुर्मासरत आध्यात्मयोगी आचार्य श्री 108 आदित्य सागर जी महाराज द्वारा प्रतिदिन रत्नकरण्ड श्रावकाचार का वाचन एवं स्वाध्याय कराया जा रहा है। चातुर्मास मुख्य संयोजक पदम जैन बिलाला ने बताया कि स्वाध्याय के दौरान बुधवार को आचार्यश्री ने श्रद्धालुओं को सच्चे देव, शास्त्र और गुरु के स्वरूप को समझाते हुए कहा कि जो राग-द्वेष से रहित, वीतराग एवं सर्वज्ञ परमात्मा हैं, वही सच्चे देव हैं। जो जिनेन्द्र भगवान की वाणी के माध्यम से आत्मकल्याण और मोक्ष का मार्ग दिखाए, वही सच्चा शास्त्र है तथा जो स्वयं संयम एवं आत्मसाधना के मार्ग पर चलकर जीवों को मोक्षमार्ग की प्रेरणा दें, वही सच्चे गुरु हैं। चतुर्दशी की शाम भक्तामर दीप अर्चना का आयोजन किया गया। इसके बाद चातुर्मास कलश के समक्ष इस पखवाड़े में सर्वाधिक जाप करने वाले श्रद्धालुओं का उत्साहवर्धन किया गया। इसमें अनिता बिंदायक्या ने प्रथम, पुष्पा बिलाला ने द्वितीय तथा शकुंतला बिंदायक्या ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। आगामी धार्मिक आयोजनों की जानकारी देते हुए बताया गया कि 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस, 18 अगस्त को भगवान नेमिनाथ जी का जन्म एवं तप कल्याणक तथा 19 अगस्त को भगवान पार्श्वनाथ जी का मोक्ष कल्याणक संघ के सान्निध्य में श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ मनाया जाएगा। चातुर्मास के दौरान मंदिर परिसर में प्रतिदिन श्रद्धालु स्वाध्याय, जाप एवं धार्मिक अनुष्ठानों में सहभागिता कर धर्मलाभ प्राप्त कर रहे हैं।

# अच्छे संस्कार संतान के लिए उपहार के समान होते हैं: पट्टाचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज

**नई दिल्ली. शाबाश इंडिया**

पट्टाचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज के परम भक्त वैभव जैन बड़ामलहरा ने बताया कि दिगंबर जैन श्रमण संस्कृति के उन्नायक पट्टाचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि ब्रह्मांड में सबसे श्रेष्ठ कोई सुख है तो वह मानसिक एवं आत्मिक सुख है। आत्मिक सुख शाश्वत और निरंतर होता है। यही वास्तविक सुख है। इसके लिए बाहरी साधनों की आवश्यकता नहीं होती। सामग्रियों में सुख नहीं है, यदि साधनों में सुख होता तो सभी धनपति सुखी होते। उन्होंने कहा कि भोगों में शांति नहीं, जबकि योग में शांति, सुख और शाश्वत आनंद है। साधनविहीन साधना ही सुखकारी होती है।

## इंद्रिय सुख क्षणिक

मुनिश्री ने कहा कि पांच इंद्रियों–स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण–के विषय-भोगों की लालसा में व्यक्ति संसार में अनेक कष्ट प्राप्त करता है। इंद्रिय सुख विनाशी, क्षणिक और नश्वर हैं। वास्तव में इंद्रिय सुख सुख नहीं, बल्कि सुखाभास हैं। इंद्रिय सुखों के साधन जुटाने में श्रम, उन्हें भोगने में उन्माद, वियोग में पीड़ा तथा भोग के बाद पश्चाताप होता है। भोगों से कभी संतुष्टि नहीं मिलती, बल्कि इच्छाएं और कामनाएं बढ़ती जाती हैं।

## भक्ति की सुगंध से देवों का आगमन

उन्होंने कहा कि गुरु भक्ति और प्रभु भक्ति से स्वर्ग सुख के साथ शाश्वत सुख-शांति स्वरूप निर्वाण सिद्धि भी परंपरा से प्राप्त होती है। जहां पुष्पों की सुगंध होती है, वहां भौंरे स्वयं आने लगते हैं। इसी प्रकार जहां सच्चे गुरुओं के दिव्य उपदेश होते हैं, वहां भक्त स्वयं पहुंच जाते हैं। जहां जिनेंद्र देव की भक्ति होती है, वहां स्वर्ग के देव भी आते हैं।

## संस्कार संतान के लिए उपहार

पट्टाचार्यश्री ने कहा कि अच्छे संस्कार संतान के लिए उपहार के समान होते हैं। अच्छे संस्कार ही संतान को श्रेष्ठ, योग्य, विनयवान, विवेकी, यशस्वी, समृद्ध एवं सफल बनाते हैं। संतान का हित चाहते हैं तो माता-पिता को धन-संपत्ति के साथ संतान को संस्कारों का उपहार भी देना चाहिए। संस्कारों से ही संस्कृति की रक्षा संभव है। देश और विश्व को विनाश से बचाना है तो संतान को संस्कारों से सुशोभित करना होगा। उन्होंने कहा कि धर्म, संप्रदाय, पंथ और परंपराएं भिन्न हो सकती हैं, लेकिन नैतिक संस्कार सभी में श्रेष्ठ होने चाहिए। क्लेश से मुक्ति चाहिए तो संक्लेश से मुक्त होना होगा।

**देशना : दिगंबर जैन संत आचार्य विशुद्ध सागर**
**संकलन : मुनि सुव्रत सागर जी**
**लेखक : वैभव जैन बड़ामलहरा**

**अभिषेक अशोक पाटील**
**कार्याध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवा परिषद, कोल्हापुर**

# पैंक्रियाटाइटिस

पैंक्रियाटाइटिस अग्न्याशय में होने वाली सूजन है। अग्न्याशय पेट के ऊपरी हिस्से में, आमाशय के पीछे स्थित एक महत्वपूर्ण अंग है। यह पाचन के लिए एंजाइम तथा रक्त में शर्करा को नियंत्रित करने वाले इंसुलिन जैसे हार्मोन बनाता है।

## पैंक्रियाटाइटिस मुख्यत: 2 प्रकार का होता है...

1. **तीव्र पैंक्रियाटाइटिस:** यह अचानक शुरू होता है और हल्के से लेकर गंभीर रूप तक हो सकता है। गंभीर स्थिति में तत्काल चिकित्सकीय उपचार की आवश्यकता पड़ सकती है।
2. **दीर्घकालिक पैंक्रियाटाइटिस:** इसमें अग्न्याशय में लंबे समय तक या बार-बार सूजन रहने से स्थायी क्षति और दाग बनने की समस्या हो सकती है। इसके लिए लंबे समय तक चिकित्सकीय देखभाल की आवश्यकता पड़ सकती है।

## प्रमुख कारण

पैंक्रियाटाइटिस के सामान्य कारणों में पित्त की पथरी, अत्यधिक शराब का सेवन, रक्त में ट्राइग्लिसराइड का बहुत अधिक बढ़ना, कुछ दवाओं का प्रभाव, पेट में चोट, रक्त में कैल्शियम का अधिक होना तथा अग्न्याशय या पित्त नली में रुकावट शामिल हैं। कुछ मामलों में आनुवंशिक या अन्य कारण भी हो सकते हैं और कई बार कारण स्पष्ट नहीं हो पाता।

## प्रमुख लक्षण

पेट के ऊपरी हिस्से में तेज दर्द
दर्द का पीठ या कंधों की ओर फैलना
भोजन के बाद दर्द बढ़ना
मतली एवं उल्टी
बुखार
पेट में दर्द या संवेदनशीलता
तेज धड़कन
भूख कम लगना
दीर्घकालिक पैंक्रियाटाइटिस में लंबे समय तक पेट दर्द, बिना प्रयास वजन कम होना, दस्त तथा तैलीय या दुर्गंधयुक्त मल हो सकता है। अग्न्याशय के पाचन एंजाइम कम बनने पर पोषक तत्वों के अवशोषण में भी समस्या हो सकती है।

## कब तुरंत अस्पताल जाएं?

यदि अचानक बहुत तेज पेट दर्द, लगातार उल्टी, बुखार, पीलिया, सांस लेने में परेशानी, अत्यधिक कमजोरी या बेहोशी जैसा महसूस हो तो घरेलू उपचार पर निर्भर न रहें और तत्काल चिकित्सकीय सहायता लें। तीव्र पैंक्रियाटाइटिस कभी-कभी गंभीर और जानलेवा हो सकता है।

## जांच

**डॉक्टर लक्षणों एवं स्थिति के अनुसार निम्न जांच करा सकते हैं...**

रक्त में लिपेज एवं एमाइलेज
लीवर फंक्शन टेस्ट
रक्त शर्करा, ट्राइग्लिसराइड एवं कैल्शियम की जांच
पेट की सोनोग्राफी
आवश्यकता के अनुसार सीटी स्कैन या एमआरआई
कुछ मामलों में एंडोस्कोपिक अल्ट्रासाउंड या अन्य जांच
पैंक्रियाटाइटिस का निदान केवल किसी एक जांच के आधार पर नहीं किया जाता; चिकित्सक लक्षणों, शारीरिक जांच और आवश्यक परीक्षणों को साथ में देखते हैं।
सावधानी और बचाव
शराब से पूरी तरह बचें।
धूम्रपान न करें।
बहुत अधिक तला-भुना एवं वसायुक्त भोजन कम करें।
संतुलित एवं पौष्टिक आहार लें।
पित्त की पथरी होने पर चिकित्सकीय सलाह लें।
ट्राइग्लिसराइड एवं रक्त शर्करा को नियंत्रित रखें।
बिना डॉक्टर की सलाह के दवाएं शुरू या बंद न करें।
बार-बार होने वाले पेट दर्द को नजरअंदाज न करें।
यदि पित्त की पथरी पैंक्रियाटाइटिस का कारण है, तो केवल खानपान में बदलाव पर्याप्त नहीं हो सकता; कारण के अनुसार चिकित्सकीय उपचार या अन्य प्रक्रिया की आवश्यकता पड़ सकती है।

## होम्योपैथिक उपचार के बारे में

पैंक्रियाटाइटिस, विशेषकर तीव्र पैंक्रियाटाइटिस, में होम्योपैथी को मुख्य या आपातकालीन उपचार का विकल्प नहीं माना जाना चाहिए। ऐसी स्थिति में अस्पताल में चिकित्सकीय उपचार आवश्यक हो सकता है। उपचार में दर्द का नियंत्रण, शरीर में तरल पदार्थों की पूर्ति, पोषण तथा पैंक्रियाटाइटिस के मूल कारण का उपचार शामिल हो सकता है। होम्योपैथी की कुछ औषधियों का उपयोग कुछ चिकित्सक लक्षणों के आधार पर करते हैं, लेकिन पैंक्रियाटाइटिस की सूजन, पित्त की पथरी या अग्न्याशय की क्षति को ठीक करने में इनके प्रभाव के पर्याप्त वैज्ञानिक प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं। इसलिए इन्हें प्रमाणित चिकित्सकीय उपचार के स्थान पर नहीं लेना चाहिए और किसी भी वैकल्पिक उपचार के बारे में अपने चिकित्सक को अवश्य बताना चाहिए।

## महत्वपूर्ण

यदि आपको पैंक्रियाटाइटिस का संदेह है, तो चिकित्सकीय जांच कराना आवश्यक है। डॉक्टर आवश्यकता के अनुसार लिपेज, एमाइलेज, सोनोग्राफी, सीटी या अन्य जांच करा सकते हैं। खासकर यदि पित्त की पथरी भी मौजूद है, तो उसके उचित उपचार के लिए विशेषज्ञ चिकित्सक की सलाह लेना जरूरी है।

**डॉ. एम. एल. जैन ''मणि''**
**बी.एम.एस. (होम्योपैथी), पीएच.डी.**
**अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त वरिष्ठ होम्योपैथ**
**पूर्व शैक्षणिक सदस्य, होम्योपैथिक विश्वविद्यालय, जयपुर**

## यदि किसी ने आपके लिए गड्ढा खोदा है तो उसमें आम-अमरूद का वृक्ष लगाएं : अंतर्मना आचार्य प्रसन्न सागरजी महाराज

**औरंगाबाद. शाबाश इंडिया।** पुष्पगिरी सोनकच्छ में परम पूज्य पुष्पगिरी तीर्थ प्रणेता गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागर महाराज के सान्निध्य में अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज एवं उपाध्याय पियूष सागरजी महाराज ससंघ वर्षायोग के लिए विराजमान हैं। उनके सान्निध्य में प्रतिदिन विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं। गुरुभक्तों को संबोधित करते हुए आचार्यश्री ने कहा कि यदि किसी ने आपके लिए गड्ढा खोदा है तो चिंता मत करो, बल्कि अपना चिंतन बदलो और उसी गड्ढे में आम-अमरूद का वृक्ष लगा दो। उन्होंने कहा कि आग का समाधान आग नहीं, पानी है; गाली का समाधान गाली नहीं, गीत है; अपमान का समाधान अपमान नहीं, सम्मान है और हिंसा का समाधान हिंसा नहीं, अहिंसा है। उन्होंने कहा कि हिंसा एक झूठी शक्ति है। हिंसा का अंत है, जबकि अहिंसा अनंत है। परिस्थितियां भले ही ऐसी लगें कि अहिंसा पर हिंसा हावी हो रही है, लेकिन अंततः जीत अहिंसा और सत्य की ही होती है। आचार्यश्री ने कहा कि रात जितनी काली होगी, सुबह उतनी ही करीब होगी। विवेक का सूर्योदय होते ही अविवेक और अज्ञान का अंधकार मिट जाएगा। यह जानकारी प्रचार-प्रसार संयोजक नरेंद्र अजमेरा एवं पियुष कासलीवाल ने दी।

# पान मसाला की प्लास्टिक पैकिंग पर रोक का स्वागत

### अब प्लास्टिक-मुक्त कागज, टिन या कांच के कंटेनर में ही होगी पैकिंग

**कोटा. शाबाश इंडिया।** पर्यावरण संरक्षण एवं सामाजिक चेतना के लिए ''पॉलीथिन मुक्त भारत अभियान'' चला रहीं नेशनल यूथ अवार्ड प्राप्त पर्यावरण मित्र दिव्या कुमारी जैन ने पान मसाला की पैकेजिंग में प्लास्टिक के उपयोग पर रोक के निर्णय का स्वागत किया है। खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण द्वारा निर्धारित नए पैकेजिंग मानकों के तहत पान मसाला के लिए प्लास्टिक-मुक्त कागज, पेपर बोर्ड, सेलुलोज अथवा अन्य प्राकृतिक सामग्री के साथ टिन या कांच के कंटेनर का उपयोग किया जा सकेगा। प्लास्टिक, एल्युमिनियम फॉयल और सिंथेटिक लेमिनेट वाली पैकिंग की अनुमति नहीं होगी। दिव्या जैन ने कहा कि प्लास्टिक एवं एल्युमिनियम फॉयल वाले पाउच लंबे समय तक नष्ट नहीं होते और पर्यावरण प्रदूषण बढ़ाते हैं। उन्होंने कहा कि इस निर्णय से बड़ी मात्रा में प्लास्टिक कचरा कम करने और जल एवं भूमि प्रदूषण को रोकने में मदद मिलेगी। उन्होंने इसे पर्यावरण संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताया।

एक सुनहरी सुबह — देश के नाम

# 15 अगस्त 2026

# भव्य स्वतंत्रता दिवस महोत्सव

★ तिरंगे की शान में सजा एक भव्य राष्ट्रोत्सव ★

## भव्य आयोजन स्थल

पुरसनाराम पार्क, निकट झूलेलाल मंदिर
सेक्टर 5, जवाहर नगर, जयपुर – 302004

कार्यक्रम शुभारंभ: सुबह 7:30 बजे
ध्वजारोहण: सुबह 8:30 बजे
सांस्कृतिक कार्यक्रम: सुबह 8:40 बजे से

## पुरसनाराम पार्क परिवार

एवं

## प्रेम मंदिर संस्थान, जवाहर नगर

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

## स्वतंत्रता दिवस विशेष समारोह

आइए... इस स्वतंत्रता दिवस को केवल मनाएँ नहीं,
मिलकर इसे ऐतिहासिक और अविस्मरणीय बनाएँ

### ★ हमारे विशिष्ट अतिथि ★

- **श्री नरेंद्र लख्खी जी** — समाजसेवी एवं प्रेसिडेंट – प्रेम मंदिर संस्थान
- **श्रीमती नंदा लख्खी जी** — समाजसेविका
- **श्री मुकेश साध जी** — समाजसेवी
- **श्रीमती उर्मिला जैन जी** — समाजसेविका
- **श्री एस. के. राव जी** — बॉलीवुड कोरियोग्राफर
- **श्री गंगा स्वरूप जी शर्मा** — समाजसेवी
- **श्री जी. आर. नायक जी** — समाजसेवी

### ★ समारोह के विशेष आकर्षण ★

- 30–40 बच्चों द्वारा भव्य देशभक्ति प्रस्तुतियाँ
- प्रसिद्ध गायकों की मनमोहक देशभक्ति संध्या
- रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों की शानदार प्रस्तुति
- तिरंगे की शान में गुंजते देशभक्ति गीत

जब देशभक्ति के गीत गुंजेंगे...
तो हम केवल सुनेंगे नहीं...
हम सब मिलकर गाएँगे, गुनगुनाएँगे
और पूरे वातावरण को
तिरंगे के रंग में रंग देंगे

यह दिन हम सबका है...
यह तिरंगा हम सबका है...
यह मातृभूमि हम सबकी है...
और इसे यादगार
बनाने की जिम्मेदारी
भी हम सबकी है !

पूरे परिवार के साथ
★ **सादर आमंत्रण** ★
सादर निवेदन –
आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है

15 अगस्त 2026

एक ऐसा उत्सव
जो इतिहास बन जाएगा
जिसकी यादें हमेशा
दिलों में जीवित रहेंगी

देश के गीत गाएँगे...
मातृभूमि की महिमा गुनगुनाएँगे...
और मिलकर बोलेंगे –
**भारत माता की जय!**
**वंदे मातरम्!**

### जवाहर नगर पुरसनाराम पार्क विकास समिति

| अध्यक्ष | सचिव | कोषाध्यक्ष |
|---|---|---|
| ऋषि जैन | अशोक चंदानी | राजीव मेहता जी |

### प्रेम मंदिर शिक्षण संस्थान

| अध्यक्ष | सचिव |
|---|---|
| श्री नरेंद्र लख्खी | श्रीमती रंजू जैन |

**जरूर... जरूर... जरूर आइए**
★ आपकी उपस्थिति ही इस समारोह को ऐतिहासिक बनाएगी ★